International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2021; 3(1): 288-294
Received: 13-01-2021
Accepted: 17-03-2021

डॉ सुमन कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली,
भारत

डॉ सुशांत कुमार झा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली,
भारत

Corresponding Author:
डॉ सुमन कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली,
भारत

भारतीय विदेश नीति एवं कोरोना मैत्री की कूटनीति

डॉ सुमन कुमार एवं डॉ सुशांत कुमार झा

सारांश
अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर कोरोना (COVID-19) जैसी महामारी ने विदेश नीति के सन्दर्भ में भी कई नए आयाम को जोड़ा है । इस महामारी की आपदा को अवसर में बदलते हुए भारत ने अपनी परंपरागत विदेश नीति को एक नया मोड़ दे कर कोरोना मैत्री के प्रयास से न सिर्फ दक्षिण एशिया में बल्कि पूरे विश्व में अपनी शक्ति का आभास दिलाया है। चीन के वुहान से शुरू होकर यह महामारी पूरे विश्व में फैल गई और इससे बचने का तत्कालीन उपाय जब किसी भी देश को नहीं सूझ रहा था तब सभी ने लॉकडाउन जैसे नियम का या उपाय का सहारा लिया। विश्व में सिर्फ पांच ऐसे देश हैं जो कोविड -19 महामारी के टीके को विकसित करने में सफल रहे हैं और यह देश हैं संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, रूस, चाइना एवं भारत। आज भारत 100 से अधिक देशों को इन टीकों को उपलब्ध करवा रहा है। कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में भारत निर्णायक भूमिका निभा रहा है। गरीब देशों को लाखों की संख्या में कोरोना वैक्सीन उपलब्ध कराने वाले भारत की दुनिया भर में जमकर तारीफ हो रही है। यह भारत की टीका कूटनीति का ही प्रभाव है कि चीन जो गलवान से एक इंच भी पीछे हटने को तैयार नहीं था, वहां से उसने अपना सैन्य- बल हटा लिया है और दोनों देशों के बीच वास्तविक नियंत्रक रेखा पर शांति बहाल करने की बात की है। भारत की विदेश नीति स्वंत्रता से पहले भी प्रभावी थी और इस कठिन दौर में एक बार फिर भारत कोरोना मैत्री के माध्यम से अपने घरेलू हितो से समझौता किये बगैर एक नयी कूटनीति यानी टीका कूटनीति का पालन करते हुए विश्व समुदाय को यह मानने के लिए बाध्य कर दिया है कि भारत विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है और भविष्य में भी जब कभी मानवता पर खतरा होगा तो विश्व भारत की ओर आशा भरी नज़रो से देखेगा ओर भारत उन्हें कभी निराश नहीं करेगा।

मुख्य शब्द: कोरोना, टीका कूटनीति, महामारी, मास्क, टीकाकरण, वायरस, डिप्लोमेसी

प्रस्तावना
अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर कोरोना (COVID-19) जैसी महामारी ने विदेश नीति में भी कई नए आयाम को जोड़ा है। इस महामारी की आपदा को अवसर में बदलते हुए भारत ने अपनी परंपरागत विदेश नीति को एक नया मोड़ दे कर

कोरोना मैत्री के प्रयास से न सिर्फ दक्षिण एशिया में बल्कि पूरे विश्व में अपनी शक्ति का आभास दिलाया है। इसके पीछे भारत का मजबूत नेतृत्व है जो इसे कुशलता पूर्वक संचालित कर रहा है। भारत यद्पि एक विकासशील राष्ट्र है परन्तु एक कुशल नेतृत्व किस तरह से विकसित राष्ट्रों को भी अपनी शर्तो पर झुका सकता है, यह एहसास अपनी विदेश नीति को आक्रामक तथा संवेदनशील बनाकर भारत ने विश्व समुदाय को सफलतापूर्वक दिया है। कोविड-19 ने भारत को एक ऐसा अवसर प्रदान किया है कि वह न सिर्फ दक्षिण एशिया में, बल्कि एशिया में चीन के प्रभाव को सीमित कर सकने में सफल होता दिखाई पड़ रहा है। भारत ने टीका कूटनीति के माध्यम से इस तरह के प्रयास शुरू कर दिए हैं। भारत की इस नीति की सफलता इससे भी समझी जा सकती है की संक्युत राष्ट्र संघ ने भी भारत द्वारा अपनाये गए मानवीय दृश्टिकोण की सराहना की है। भारत संक्युत राष्ट्र संघ में स्थायी सीट का प्रबल दावेदार है।

चीन के वुहान से शुरू होकर यह महामारी पूरे विश्व में फैल गई और इससे बचने का तत्कालीन उपाय जब किसी भी देश को नहीं सूझ रहा था तब सभी ने लॉकडाउन जैसे नियम का या उपाय का सहारा लिया। विज्ञान की प्रगति हमेशा ही मनुष्य को सहूलियत देने में सफल रही है और इस महामारी के फैलने के पश्चात इससे निपटने के विभिन्न उपायों की तलाश शुरू हुई तब विज्ञान ने इसका जो निदान प्रस्तुत किया वह था टीका। यह टीका तभी संभव होता जब मनुष्य के लिए यह लाभकारी साबित होता। यद्यपि कुछ वर्षों पर या कुछ वर्षों के अंतराल में हमेशा ही कोई न कोई इस तरह की महामारी उभरती रहती है परंतु यह एक अनूठी महामारी आई जिसके आगे हमारे सभी उपलब्धियां फीकी पड़ गई। इस महामारी से निपटने के लिए विभिन्न देश अपने अपने स्तर पर प्रयास करते रहे और इसने विदेश नीति के एक नए आयाम यानी टीका की विदेश नीति की शुरुआत की। शुरुआती दौर में जहां चेहरे को ढकने के लिए मास्क का प्रयोग अनिवार्य किया गया और जब तक इसकी उपलब्धता सुनिश्चित की जाती तब तक सबसे पहले चीन ने विश्व के अन्य देशों को ऐसे मास्क उपलब्ध कराने शुरू किए। इन्हें इस तरह भी देखा जा सकता है कि जिस तरह से पहले आर्थिक क्षेत्र में बड़ी आर्थिक शक्तियां छोटे देशों की मदद करती थी और उनका विश्वास जीतने में सफल होती थी कि उनका उद्धार तभी हो सकता है जब वह बड़े देशों द्वारा अपनाई गई नीतियों का पालन करें और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलें, इस महामारी के दौर के बाद इस विदेश नीति में यह नया बदलाव आता दिखाई देता है जहां एक देश दूसरे देश को मास्क और उसके बाद टीका जैसी अत्यावश्यक जरूरत को पूरा करने के लिए आगे हाथ बढ़ाता है और उन कमजोर देशों का विश्वास जीतने की कोशिश करता है।

भारत की विदेश नीति में भी हमें टीके की महत्ता समझ में आती है। 8 जनवरी 2021 को भारत ने पहले टीके का परीक्षण किया इस पहले चरण के परीक्षण में 718 जिला शामिल किए गए। 12 जनवरी 2021 से भारत में व्यापक स्तर पर टीकाकरण की शुरुआत हुई। अपने देश में नागरिकों को टीका उपलब्ध कराने के साथ-साथ भारत ने विश्व के अन्य देशों में भी टीके की उपलब्धता सुनिश्चित की है।

टीका कूटनीति

कोविड -19 की विश्वव्यापी महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ साथ विदेश नीति एवं कूटनीति के तत्त्व को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। इस महामारी ने भारत जैसे देश को एक ऐसा अवसर प्रदान किया है कि वह न सिर्फ दक्षिण एशिया में, बल्कि एशिया में चीन के

प्रभाव को सीमित कर सका है। टीका कूटनीति वैश्विक स्वास्थ्य कूटनीति का एक प्रारूप है, जिसके माध्यम से एक राष्ट्र अन्य देशों के साथ संबंधों को मज़बूत करने के लिये टीकों के विकास या वितरण का उपयोग करता है तथा अन्तराष्ट्रीय जगत में अपने प्रभाव का विस्तार और प्रतिपक्षी के प्रभाव को सीमित करने का प्रयास करता है।

कोरोना टीका का ईज़ाद

विश्व में सिर्फ पांच ऐसे देश हैं जो कोविड - 19 महामारी के टीके को विकसित करने में सफल रहे हैं, ये देश हैं - संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, रूस, चीन एवं भारत। भारत में टीका का निर्माण बड़े पैमाने पर हो रहा है और उसने इसका निर्यात भी करना शुरू कर दिया है। अमेरिका ने दो टीके का ईजाद किया है जो मोडर्ना एवं फाइजर हैं। रूस ने जिस टीके का इजाद किया है वह स्पूतनिक - v है। इंग्लैंड ने जिस टीके का इजाद किया है उसका नाम कोविशील्ड है तथा यह भारत में बन रहा है। चीन ने भी सिनोफर्मा व सिनोवैक नामक दो तरह के कोरोना वायरस टीके को तैयार किया है । भारत में अभी दो तरह के टीके कोविशील्ड एवं कोवैक्सीन का निर्माण चल रहा है। कई देशों को तो वह सहायता की दृष्टि से मुफ्त में भी टीके की आपूर्ति कर रहा है। इससे विश्व में भारत की धाक जमती जा रही है और उसके प्रभुत्व का विस्तार हुआ है। विश्व में कई प्रकार के टीकों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जा रहा है जिसमे फाईज़र, मोडर्ना और कोवीशील्ड जैसे टीके प्रमुख हैं। इसमें सबसे प्रभावी फाईज़र है। इसकी एक्यूरेसी तक़रीबन 98% लेकिन इसे - 60 से - 90 डिग्री के तापमान पर संरक्षित और सुरक्षित रखना सभी देशों के लिए असंभव है। मोडर्ना वैक्सीन को -15 से -20 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर संरक्षित रखना जरुरी है। स्पूतनिक - v के लिए -18 डिग्री सेल्सियस जरुरी है। [1] जबकि कोविशील्ड का विकास ब्रिटेन में ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राज़ेनेका द्वारा किया गया है। ब्रिटेन के अनुरोध पर सेरम इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंडिया ने व्यापक रूप से कुछ शर्तो के आधार पर इसका उत्पादन शुरू कर दिया है। दूसरी तरफ, भारत बायोटेक भी स्वदेशी टीके, कोवैक्सीन, का निर्माण बड़े पैमाने पर कर रहा है। इसे 2-8 डिग्री सेल्सियस पर ठंढा रखा जाता है जिसे आसानी से किसी भी रेफ्रीजरेटर रखा जा सकता है। [2] हाल ही में ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (DCGI) ने देश में कोरोना वायरस के विरुद्ध टीका के सीमित उपयोग के लिये 'कोविशील्ड' और 'कोवैक्सीन' को मंज़ूरी दी है।

कोविशील्ड (Covishield): यह ऑक्सफोर्ड-एस्ट्राज़ेनेका द्वारा विकसित कोरोना वायरस टीका है जिसे तकनीकी रूप से बीबी - वी 152 कहा जाता है।

कोवैक्सीन (Covaxin): यह भारत का एकमात्र स्वदेशी कोरोना टीका है, जिसे रोग पैदा करने वाले जीवित सूक्ष्मजीवों को निष्क्रिय कर विकसित किया जाता है। भारत के स्वदेशी कोरोना टीका जिसका कोड नेम बी बी वी 152 है, इसका द्वितीय चरण के परीक्षण के बाद चिकित्सीय शोध पत्रिका लांसेट ने विश्व के अन्य टीका की तुलना में ज्यादा सुरक्षित तथा प्रतिरोधक क्षमता तेजी से विकसित करने वाला बताया है। [3]

पड़ोसी देशों के प्रति टीका कूटनीति

चीन कोरोना वायरस के टीका (Corona virus Vaccine) के मामले में किस तरह भारत (India) से प्रतियोगिता कर रहा है, ये हाल के दिनों में देखने को मिला है। भारत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की कोवैक्स (COVAX) पहल के तहत कई मध्यम और कम आय वाले देशों सहित

अपने पड़ोसी देशों को भी टीका मुहैया कराई है जिसकी डब्ल्यूएचओ और अमेरिका सहित कई देशों ने प्रशंसा की। इसके बाद चीन ने भारत की नकल करते हुए पहले तो कोवैक्स में टीका की एक करोड़ खुराक देने की घोषणा की और अब वो भारत के पड़ोसी देशों को भी टीका उपलब्ध करा रहा है।

वैक्सीन कूटनीति के अंतर्गत भारत ने पडोसी देशों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया है। यह देखकर चीन दक्षिण एशिया में भारत के साथ प्रतिस्पर्धा में संलग्न हो गया है। काठमांडू में चीन के दूतावास की ओर से हाल में कहा गया था कि चीन नेपाल को टीका की तीन लाख खुराक देगा जिससे नेपाल के एक लाख पचास हजार लोग लाभान्वित हो सकते हैं। 'माए रिपब्लिका' पोर्टल के मुताबिक दोनों देशों के विदेश मंत्रियों के बीच हुई बातचीत में चीन ने नेपाल को पांच लाख खुराक देने का फैसला किया है। चीन के इस फैसले को बीजिंग की टीका कूटनीति (Vaccine Diplomacy) के प्रयासों के रूप में भी देखा जा रहा है। इससे पहले 22 जनवरी को भारत ने नेपाल को कोविड-19 टीका (India send Vaccines to Nepal) की दस लाख खुराक भेंट की थीं। [4] भारत ने नेपाल को इसके ड्राई रन, इससे सम्बंधित चिकित्स्यीय सुविधाओं व प्रशिक्षण के प्रति भी सहयोग करने आश्वासन दिया है। वैक्सीन कूटनीति के अंतर्गत भारत ने पडोसी देशों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया है। यह देखकर चीन दक्षिण एशिया में भारत के साथ प्रतिस्पर्धा में संलग्न हो गया है।

फाइनेंसियल एक्सप्रेस ऑनलाइन से बातचीत में वरिष्ठ पत्रकार और बांग्लादेश कमेंटेटर गौतम लाहिड़ी का कहना है कि टीका डिप्लोमेसी में यह भारत की डिप्लोमेटिक जीत है। बांग्लादेश ने भारतीय टीका के क्लिनिकल ट्रॉयल पर सहमति जताई है। चीन ने सिनोवैक बॉयोटेक लिमिटेड द्वारा बनाए गए कोरोना टीका के ट्रायल को लेकर बांग्लादेश को वित्तीय सहारा देने की पेशकश की लेकिन बांग्लादेश ने इसे अस्वीकार कर दिया। बांग्लादेश की कंपनी बेक्सिमो फॉर्मा ने भारत की सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया के साथ प्रॉयोरिटी बेसिस पर टीका सप्लाई को लेकर समझौता हुआ है। [5] इस नीति के अंतर्गत भारत ने बंगला देश को 20 लाख टीका के खुराक उपलब्ध कराये हैं। बांग्लादेश को ये पता है कि चीन नहीं, भारत ही उसका सच्चा मित्र है।

टीका-मैत्री उपक्रम

आज भारत 100 से अधिक देशों को इन टीकों को उपलब्ध करवा रहा है। कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में भारत निर्णायक भूमिका निभा रहा है। गरीब देशों को लाखों की संख्या में कोरोना वैक्सीन उपलब्ध कराने वाले भारत की दुनियाभर में जमकर तारीफ हो रही है। भारत कोरोना के खिलाफ लड़ाई में अब उन देशों के साथ खड़ा है, जो इसमें थोड़ा कमजोर पड़ रहे थे। हाल ही में, यू एन चीफ ने भी इसे लेकर चिंता जताई थी। उन्होंने दुनिया के सभी देशों को समान रूप से टीका उपलब्ध कराने पर जोर दिया था और सिर्फ 15 देशों में 70 फीसदी टीका के इस्तेमाल पर चिंता जताई थी। [6] ऐसे हालात में भारत पड़ोसी देशों को टीका उपलब्ध कराने के बाद अब उन कैरेबियाई देशों को भी टीके उपलब्ध कराने की तैयारी कर रहा है, जो कोरोना से जंग में पीछे छूट रहे थे। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, लैटिन अमेरिका, कैरैबियाई देशों और अफ्रीका महाद्वीप के कुल 49 देशों में टीका की सप्लाई की योजना भारत ने बनाई है। बताया गया कि ये टीका गरीब देशों को मुफ्त में उपलब्ध कराई जाएगी। टीका फ्रेंडशिप के तहत भारत ने दुनिया में 22.9 मिलियन टीके बांटे हैं, जिसमें 64 लाख से ज्यादा टीका गरीब देशों को अनुदान के रूप में दिया है।

डोमिनियन रिपब्लिक को कोरोना के 30 हजार टीके उपहार के तौर पर दिए गए हैं। इसके अलावा डोमिनिका को भी 70 हजार टीका उपलब्ध कराए है। फरवरी की शुरुआत में भारत ने बारबाडोस को 10 हजार टीके उपलब्ध कराए थे। इन सबके अलावा संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के लिए भी भारत ने दो लाख से ज्यादा टीके सौगात के तौर पर देने का वादा किया है। यही कारण है कि भारत की टीका डिप्लोमेसी की दुनिया भर में तारीफ की जा रही है। [7]

टीका-मैत्री उपक्रम के अंतर्गत भारत ने ब्राज़ील, मैक्सिको, अफगानिस्तान, मायंमार, मोरिशस जैसे देशों को कारोना के टीके उप्लब्ध करने का सराहनीय प्रयास किया है। उसने मक्सिको को 8.70000 टीका, ब्राज़ील को 2 मीलियन टीका, अफगानिस्तान को 5 लाख टीका, श्री लंका को 5 लाख टीका, मोरीशस को 1 लाख टीका, मयन्मार को 1.5 मिलियन टीका और सेशल्स को 50 हज़ार टीका की डोज़ उपलब्ध करने का प्रयास किया है। [8] भारत ने कनाडा को भी टीके की आपूर्ति के प्रति आश्वस्त किया है। यह भारत की कूटनीति का प्रभाव है कि ये देश आज की तारीख में चीन के राजनीतिक व आर्थिक प्रभाव से मुक्त दिखते हैं। आज पाकिस्तान जैसा चीन का पिछलग्गू देश भी कोरोना टीके के लिए भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहा है।

कोरोना के खतरे से निपटने की दिशा में भारत की कूटनीति ने दुनिया के सामने एक नई मिशाल पेश की है। ईरान, इटली और यूरोप के तमाम देशों में रहने वाले भारतीयों को देश वापस लाया गया, जबकि उन्हें वहां से लाने में बहुत ज्यादा मुसीबतें सामने आई थीं। इसके अलावा भारत ने सार्क देशों की एक विशेष बैठक बुलाकर इस वैश्विक महामारी से लड़ने की साझेदारी का नेतृत्व भी किया है। चूंकि यह समस्या वुहान से निकले कोरोना वायरस से उत्पन्न हुई है। इसलिए इसको लेकर भी दुनिया की प्रतिक्रिया भिन्न है। जहां इस मामले में अमेरिका ने चीन को दोषी माना, वहीं अमेरिकी मीडिया पर चीन ने स्वयं को बदनाम करने की साजिश की बात कही, लेकिन आज समस्या जैविक हथियारों को लेकर है या भौतिकवादी जीवनशैली को लेकर। इटली में तमाम बदहाल दशाओं के बावजूद भारत ने वहां से अपने ढाई सौ छात्रों को निकाल कर उनके परिवारों तक पहुंचाया। इसके पहले भी भारत ने चीन के वुहान से व्यापक संख्या में अपने फंसे हुए नागरिकों को निकाला था। जहां दुनिया के कई देश अपने ही फंसे हुए लोगों को निकाल कर लाने की बात पर चुप्पी साधे हुए हैं, वहीं भारत ने नागरिकता और देश के बीच भारतीय सोच को विकसित किया है, जो दुनिया के लिए एक नया आयाम बनेगा। [9]

टीका कूटनीति एवं वैश्विक अनुक्रियाएं

भारत की टीका कूटनीति ने रंग लाना शुरू कर दिया है वह चाहे अन्तराष्ट्रीय संगठन हो या बड़े - बड़े राष्ट्र, वैश्विक पत्रिकाएं हों या समाचार पत्र, भारत की इस पहल की जमकर तारीफ कर रहे हैं। वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक पत्रकार ने कहा कि टीका डिप्लोमेसी की रेस में भारत ने सबको चौंका दिया है और वैश्विक लीडर बनकर उभरा है। उसने अपने नागरिकों के लिए तय किए गए टीका की संख्या के मुकाबले तीन गुना ज्यादा टीका दुनिया भर के देशों को निर्यात किया है। उन्होंने आगे कहा कि भारत अभी और टीके निर्यात कर सकता है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने भारत के टीका डिप्लोमेसी को चीन को परास्त करने की कोशिश बताया है। अपनी एक रिपोर्ट में न्यूयॉर्क टाइम्स ने लिखा कि भारत बेमिसाल टीका निर्माता देश है, जो अपने पड़ोसियों और गरीब देशों को करोड़ों टीका उपलब्ध करा रहा है। बांग्लादेश के विदेश मंत्री ने कोरोना टीका की शिपमेंट पहुंचने के बाद कहा कि भारत 1971 के लिबरेशन वॉर के दौरान भी

बांग्लादेश के साथ खड़ा रहा और आज जब महामारी ने दुनिया को तबाह कर दिया है, तब भारत कोरोना टीका के उपहारों के साथ एक बार फिर आगे आया है। वहीं, नेपाल के स्वास्थ्य मंत्री हृदयेश त्रिपाठी ने भी भारत की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। मालदीव के नेता मोहम्मद नशीद ने भारत के 'गिफ्ट' के लिए धन्यवाद कहा और भारत को अच्छा दोस्त बताया। [10]

यह भारत की टीका कूटनीति का ही प्रभाव है कि चीन जो गलवान से एक इंच भी पीछे हटने को तैयार नहीं था, वहां से उसने अपना सैन्य- बल हटा लिया है और दोनों देशों के बीच वास्तविक नियंत्रक रेखा पर शांति बहाल करने की बात की है। इसका कारण यह है चीन को यह डर है कि भारत अपनी टीका कूटनीति के माध्यम से कहीं विश्व जनमत को अपनी और आकर्षित न कर ले, जो दिख भी रहा है। पाकिस्तान ने भी यदि एक तरफ़ा युद्ध -विराम की घोषणा कर 2003 की स्थिति बहाल करने की बात की है तो उसके पीछे उसका मकसद यह है कि उसे यह पता है आने वाले समय में उसे भारत से मदद लेनी पर सकती है यदि कोरोना अपने अन्य रूप में पुनः प्रकट हुआ। ब्राज़ील, बांग्लादेश, मयन्मार जैसे देशों ने चीन को जिस तरह से झटके दिए हैं उसने चीन को अपनी अन्तराष्ट्रीय भूमिका पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य किया है। इससे इन देशों के साथ भारत के सम्बन्ध प्रगाढ़ हुए हैं। कोरोना टीके की आपूर्ति को लेकर श्री लंका के प्रति जो उदारता दिखाई है उससे चीन के प्रति श्रीलंका का मोह भंग हुआ है। पुनः तमिल नरसंहार के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र में उसे भारत की मदद भी चाहिए। नेपाल, मालदीव, अफगानिस्तान जैसे अन्य सार्क के देश भी ये भली भांति जानते हैं कि संकट के समय भारत ही उनका सच्चा मित्र बन कर उभर सकता है, चीन नहीं। खासकर कोविड - 19 महामारी के दौरान और कोरोना टीका की आपूर्ति के सन्दर्भ में भारत ने इन देशों के साथ - साथ विश्व के अन्य देशों के प्रति भी जिस प्रकार का उदार एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया है, वह सराहनीय व प्रशंसनीय ही नहीं, बल्कि मानवीय भी है।

भारत ने हमेश ही पडोसी देशों के साथ मैत्री बनाये रखने में विश्वास रखा है। प्राचीन काल से भारत वसुधैव कुटुंबकम की नीति का अनुसरण करता रहा है। भारत ने स्वाभाविक रूप से ही सदैव विश्व मैत्री का शंखनाद किया है और इस असाधारण स्थिति में अपनी टीका कूटनीति के कारण भारतीय गरिमा को और बढ़ाया है। भारत विश्व विजय की कामना न रख कर विश्व मैत्री का सन्देश देना चाहता है और कोरोना महामारी ने इसके लिए भारत को उचित अवसर प्रदान किया है या फिर यह भी कहा जा सकता है की भारत ने इस अवसर का उपयोग कोरोना मैत्री के माध्यम से अपनी साख बढ़ने के लिए सफलतापूर्वक किया है। भारत की विदेश नीति स्वंत्रता से पहले भी प्रभावी थी और इस कठिन दौर में एक बार फिर भारत कोरोना मैत्री के माध्यम से अपने घरेलू हितो से समझौता किये बगैर एक नयी कूटनीति यानी टीका कूटनीति का पालन करते हुए विश्व समुदाय को यह मानने के लिए बाध्य कर दिया है कि भारत विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है और भविष्य में भी जब कभी मानवता पर खतरा होगा तो विश्व भारत की ओर आशा भरी नज़रो से देखेगा ओर भारत उन्हें कभी निराश नहीं करेगा।

सन्दर्भ

1. https://indianexpress.com/article/explained/covid-19-vaccine-storage-optimal-temperature-cold-chain-india-explained-quixplained-7063369
2. https://www.businesstoday.in/sectors/pharma/all-indian-covid-19-vaccines-have-to-be-stored-at-2-8-degrees-celsius-dbt/story/427117.html
3. The Times of India (New Delhi), 10 March 2021

4. https://www.tv9hindi.com/world/covid-vaccine-diplomacy-china-sends-five-lakh-dose-to-nepal-competition-with-india-523488.html
5. https://www.financialexpress.com/hindi/international-news/covid-19-vaccine-diplomacy-india-to-expand-cooperation-with-neighboring-countries-for-coronavirus-vaccine-development/2117492/
6. https://www.thehindu.com/news/international/130-countries-have-not-received-a-single-dose-of-covid-19-vaccine-says-un-chief/article33869004.ece
7. https://navbharattimes.indiatimes.com/india/vaccine-diplomacy-of-india-wins-friends-in-caribbean-draws-global-praise/articleshow/81119924.cms
8. https://www.moneycontrol.com/news/photos/india/covid-19-indias-vaccine-diplomacy-helping-other-countries-overcome-pandemic-challenge-received-global-praise-6532861.html
9. https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-coronavirus-and-meaningful-diplomacy-of-the-indian-government-jagran-special-20145974.html
10. https://navbharattimes.indiatimes.com/india/vaccine-diplomacy-of-india-wins-friends-in-caribbean-draws-global-praise/articleshow/81119924.cms